International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(3): 134-135

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(3): 134-135
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 22-03-2019
Accepted: 24-04-2019

अश्वनी
छात्रः शासकीय संस्कृत महाविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ, भारत

Correspondence
अश्वनी
छात्रः शासकीय संस्कृत महाविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ, भारत

व्याकरणम्

अश्वनी

प्रस्तावना

पाणिनी, कात्यायन, पतंजलि त्रिमुनि कहे जाते है। पाणिनी ने अष्टाध्यायी ग्रन्थ रचा जिसमें आठ अध्याय एवं प्रति अध्याय चार पाद कुल 32 पाद व 3981+14=3995 सूत्र है। कात्यायन ने अष्टाध्यायी के 1500 सूत्रों पर 4000 वार्तिकों की रचना की। पतंजलि ने अष्टाध्यायी पर भाश्य लिखा जिसे महाभाष्य कहते हैं। पतंजालि ने व्याकरण को 'षब्दानुषासन' कहा है। बोप देव ने पाणिनी सहित 8 व्याकरणों का नामोल्लेख किया है जिन्होंने अपना व्याकरण षास्त्र लिखा। ये इन्द्र, चान्द्र, काषकृत्सन, आपिषलि, ष्शाकटायन, पाणिनी, अमर तथा जैनेन्द्र है। इनमें ऐन्द्र व्याकरण प्राचीनतम है। इन्द्र बृहस्पति के षिष्य थे।

''यथोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यम् '' अर्थात् त्रिमुनियों में पाणिनी से श्रेष्ठ कात्यायन तथा कात्यायन से श्रेष्ठ पतंजलि है। त्रिकाण्डषेष के अनुसार पाणिनी के 6 नाम पाणिनी–अहिक–दाक्षीपुत्रं–षलांगि–पाणिन्–षालातुरीय हैं। इनका माता का नाम दाक्षी है पिता शलंग हैं। जन्म स्थान 'षालातुर' है। जो वर्तमान में 'लाहौर' है। इनकी प्रारम्भिक विद्या तक्षषिला में हुई। इनके गुरू का नाम उपवर्षाचार्य है। जो नालंदा विष्वविद्यालय के आचार्य थे। इनका समय 500 ई0 पू0 माना है।

कात्यायन का मूल नाम वररूचि था। इन्होंने 'स्वर्गारोहण' काव्य की रचना भी की थी। पतंजलि शेषनाग के अवतार थे इन्होंने योग सूत्र तथा चरक संहिता की भी रचना की।

योगेन चित्रस्य पदेन वाचां मलं शरीरस्य च वैद्यकेन।
योऽपाकरोत् तं प्रवरं मुनीनां पतञ्जलिं प्रांजलिरानतोऽस्मि।।

पाणिनी से पूर्व वर्ति 80 आचार्य युधिश्ठिर मीमांसक के अनुसार है। पाणिनी ने भी 10 आपिषलि–काष्यप–गार्ग्य–गालव–चाक्रवर्मण–भारद्वाज–षाकटायन–षाकल्य–सेनक–स्फोटायन का नाम अष्टाध्यायी में उल्लेखित किया है। पाणिनी ने 'जाम्बतीविजय' काव्य भी लिखा था।

पंचपाठी के ग्रन्थः– अष्टाध्यायी, गणपाठ, धातु पाठ, लिंगानुषासन, उणादिसूत्र। सामान्य व विषेष नियम है– उत्सर्ग व अपवाद प्रियतद्धिताः– दाक्षिणात्याः गोर्नदीय या गोणिका पुत्र है= पतजंलि। पतंजलि पुरोहित थे = पुण्यमित्र (ष्शुंग नरेष) के । महाभाष्य प्रथमाह्निक का नाम = पस्पषाह्निक। पस्पषा का अर्थ =विमर्ष महाभाष्य में 84 आह्निक हैं।

सूत्र लक्षण

अल्पाक्षरमसंदिग्धं सारवद् विष्वतोमुखम्।
अस्तोभमन वद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः।।

भाष्य लक्षण

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र पदैः सूत्रानुसारिभिः।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाश्यं भाश्यविदो विदुः।।

वार्तिक लक्षण

उक्तानुक्तदुरूक्तानां चिन्ता यत्र प्रवर्तते।

तं ग्रन्थं वातिकं प्राहुर्वातिकज्ञा मनीषिणः। (पराषर उपपुराण)
सूत्र भेद 6

संज्ञा सूत्र- नामकरणं संज्ञा। परः सन्निकर्षः संहिता।

परिभाषाः अनियमे नियम कारिणी परिभाषा। स्थानेऽन्तरतमः तस्मिन्निति निर्दिष्टे विधि – कर्त्तव्यत्वेनोपदेषो विधिः। इकोयेणचि। नियम – बहुत्र प्राप्तौ संकोचं नियमः।सरूपाणमिकषेष एक विभक्तौ। अतिदेष – अन्य तुल्यत्व विधानं अतिदेषः। स्थानिवदादेषोऽनल्विधौ।अतिदेष सात प्रकार का है– सामान्य–रुप–निमित–तादात्म्य– ष्शास्त्र कार्य–व्यपदेषातिदेषः। अधिकार – उत्तर प्रकरणव्यापी अधिकारः। प्रत्ययाः।

सूत्र भेद 6 होते है

संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियमेव च।
अतिदेषोऽधिकारष्च शड्विधं सूत्रमुच्यते।।

सन्धि के नियम

संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते।।

समास

द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहं मद्गेहे नित्यमव्ययी भावः।
तत्पुरूष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः।।

महाभाष्यानुसार गुण लक्षण

सत्वेनिविषते उपैति पृथक् जातिषु दृष्यते।
आधेयष्चाक्रियाजष्च सोऽसत्त्व प्रकृतिर्गुणः।।

प्रत्याहार लक्षण

प्रत्याहारन्ते संक्षिप्यन्ते वर्णाः यत् स प्रत्याहारः।
निपातन सिद्ध

धातु साधन कालानांप्राप्त्यर्थं नियमस्य च।
अनुबंध विकाराणां रूढ्यर्थं च निपातनम् ।।

नञ् भेद

द्वौनञौ हि समाख्यातौ पर्युदास प्रसृज्यकौ।
पर्युदासः सदृष्यग्राही प्रसृज्यस्तु निशेधकृत्।।

कुछ विद्वानों ने नञ् के 6 अर्थ माने हैः–

तत्सादृष्यमभावष्च तदन्यत्वं तदल्पता।
अप्राषस्त्यं विरोधष्च नञर्थाः शट् प्रकीर्तिताः।।

बाहुलक के 4 भेद हैं–

क्वचिद् प्रवृत्तिः क्वचिद् विभाषा क्वचिदन्यदेव।
विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति।।

लिंग निधारण :–

स्तन केषवती स्त्री स्याल्लोमषः पुरुषः स्मृतः।
उभयोरन्तरं यच्च तदभावे नपुंसकम्।।

अव्ययः–

सदुषं त्रिपु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्।।

प्रत्याहारों में ह का 2 बार पाठ का उपयोग अट् व ष्शल् प्रत्याहार द्वारा अर्हेण व अधुक्षत् रूपों की सिद्धि के लिए किया जाता हैः–

हकारो द्विरूपात्तोऽयमटि 'शल्यपि वाञ्छता।
अर्हेणाधुक्षदित्येतद् द्वयं सिद्धं भविष्यति।।

ह्रस्वादि

एकमात्रो भवेद् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते ।,
त्रिमात्रस्तु प्लुतोज्ञेयो व्यञ्जनं चार्धमात्रकम् ।।

प्रकरण लक्षण

'शास्त्रैकदेष सम्बद्धं 'शास्त्रकार्यान्तरे स्थितम्।
आहुः प्रकरणं नाम ग्रन्थ भेदं विपष्चितः।। (पराषरोपपुराण)

व्याख्यानं लक्षण

पदार्थोक्ति विर्ग्रहो वाक्य योजना।
आक्षेपष्च समाधानं व्याख्यानं शड्विधं मतम्।।

अभ्यस्त संज्ञक 7 धातुएँ

जक्ष जागृ दरिद्राषास दीधीङ् वेवीङ् चकास्तथा।
अभ्यस्त संज्ञा विज्ञेया धातवो मुनिभाशिताः।।

पांच स्त्री ष्शव्द जिसमें विसर्ग रहता है

अवीतन्त्रीतरी लक्ष्मी धी ह्री श्रीणामुणादिषु।
सप्तानामपि ष्शब्दानां सोर्लोपो न कदाचन।।

स्वरादिगण में पांच अव्यय रेफान्त है

उर्ध्वमानं किलोनमानं परिमाणन्तु सर्वतः।
आयामस्तु प्रमाणं स्यात् संख्या बाह्या तु सर्वतः।।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. व्याकरण शास्त्र का इतिहास युधिष्ठिर मीमांसकः
2. व्याकरणशास्त्रेतिहास लोकमणिदहालः
3. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी
4. वैयाकरणभूषणसार
5. परमलघुमंजुषा